

नवभारत मुंबई, मंगलवार 20 अगस्त 2024

सुविधा केंद्र सरकार के वन एवं पर्यावरण मंत्रालय से अनुमति मिलने से सिडको को राहत

खारघर-बेलापुर कोस्टल रोड का रास्ता साफ़

■ नवी मुंबई (सं). खारघर से बेलापुर सेक्टर 11 तक बनाए जाने वाले कोस्टल रोड के साथ-साथ नेरुल में जल यातायात शुरू करने के लिए बनाई गयी जेट्टी को केंद्र सरकार के वन एवं पर्यावरण मंत्रालय द्वारा हरी झंडी मिल गयी है. कहा जा रहा है कि अब खारघर से बेलापुर सेक्टर 11 तक बनाए जाने वाले कोस्टल रोड का रास्ता साफ़ हो गया है. केंद्र सरकार द्वारा हरी झंडी मिलने के बाद सिडको को बड़ी राहत मिली है. उल्लेखनीय है कि कोस्टल प्राधिकरण ने इस प्रस्ताव को अनुमति के लिए केंद्र सरकार के वन एवं पर्यावरण मंत्रालय के पास भेजा था, लेकिन केंद्र सरकार की समिति ने इस प्रस्ताव पर अनुमति देने से मना कर दिया था. इस समिति ने साफ़ शब्दों में कहा था कि यदि कोस्टल मार्ग को अनुमति दे दी जाती है तो बड़े पैमाने पर पर्यावरण को नुकसान होगा. इसलिए इस प्रस्ताव में इस बात को भी शामिल किया जाए कि पर्यावरण को होने वाले नुकसान को पूर्ति किस तरीके से की जाएगी ?



पक्षियों की 12 प्रजातियों का है निवास

उल्लेखनीय है कि इस कोस्टल रोड के लिए जो मार्ग बताया गया है. वह पर्यावरण की दृष्टिकोण से बेहद संवेदनशील है. इस कोस्टल मार्ग में 72 विभिन्न प्रजातियों के पक्षी निवास करते हैं. इन 72 प्रजातियों में 48 बाहर से आने वाले पक्षी तथा 24 देशी पक्षी शामिल हैं. इसके साथ ही इस क्षेत्र में बड़ी संख्या में फ्लेमिंगो पक्षियों का आकामन इस परिसर में होता है. इन्हें कैसे बचाया जाएगा ? इन पक्षियों को कोई नुकसान न हो, इसका विशेष ध्यान रखने की बात कही गयी है.

205

करोड़ का खर्च बढ़ने के आसार

कोस्टल रोड बनने से जाम से मिलेगा छुटकारा

- खारघर से बेलापुर सेक्टर 11 तक कोस्टल रोड के बन जाने के बाद बड़ी संख्या में लोगों को यातायात जाम से छुटकारा मिल जाएगा.
- कोस्टल रोड के बनने के बाद नवी मुंबई में बन रहे हवाई अड्डे तथा अटल सेतु तक पहुंचने के लिए अच्छी कनेक्टिविटी मिल जाएगी.
- जिससे बड़े पैमाने पर लोगों को लाभ होगा और समय की बचत भी होगी.

8.22 हेक्टेयर खाड़ी जमीन होगी प्रभावित

सिडको ने इस मार्ग के निर्माण के लिए आदित्य एन्वायरमेंटल सर्विसेस से एक इम्पैक्ट असेसमेंट रिपोर्ट तैयार करवाई थी. जिसमें बताया गया था कि इस मार्ग के लिए खाड़ी की 8.22 हेक्टेयर जमीन सीधे तौर पर प्रभावित होगी और इसका असर 1182 मंग्रोव के पेड़ों पर पड़ेगा, जो पूरी तरह से परिपक्व हो चुके हैं. हालांकि सिडको द्वारा पुनर्रोपण करने की बात कही गयी है.